

विषय Subject : Hindi

0.85

निम्न कोड Subject Code : 0.85  
परीक्षा का विन संख्या तिथि  
Day & Date of the Examination : Saturday 29.02.2020

उत्तर देने का माध्यम  
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के क्रमांक लिखें लोड को दर्शाएँ :	Code Number	Set Number
Write code No. as written on the top of the question paper.	५/१/१	● ② ③ ④

आतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका (ओ) की संख्या  
No. of supplementary answer -book(s) used

बोचार्क विकलाग व्यक्ति  
हौं / नहीं  
Person with Benchmark Disabilities Yes / No

विकलागता का कोड  
(छेद नं. पत्र के अनुसार)  
Code of Disabilities  
(as given on Admit Card)

क्या लेखन - लिपिक उपलब्ध करवाया गया है हैं / नहीं  
Whether writer provided : Yes / No

यदि दृष्टिशील हैं तो उपरोक्त में लाए गये  
सोफ्टवेयर का नाम :  
If Visually challenged, name of software : ed :

\*एक जाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक छाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का  
नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।  
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the  
name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपायग के लिए  
Space for office use

२५७८ - क

**प्रश्न-** (क) नैनी तकनीक के समर्थक दावा करते हैं कि जब यह अपने पूरे वज़ूद में आएगी तो धरती का नामोनिशान मिट जाएगा और नैनी रोबोट की स्वनिर्मिति फौज पूरी तरह फ्रांट-विक्रांत शब्द को पलक इपकरे ही चुस्त-दुर्स्त इंसान में तबदील कर देगा। इस तकनीक के समर्थकों अनुसार यह विकान का घोल्कार है जो समाज के अंतर्गत लाभकारी सिद्ध होगी।

(ख) नैनी तकनीक की असीमित शक्ति से आशँकित विशेषियों का मत है कि यह तकनीक मिस्त के पिरामिडों में सोई ममियों से भी ज़्यादा अभिशप्त है। उनके अनुसार नैनी तकनीक का इस्तेमाल यदि गलत कामों के लिए किया जाए तो अहं बेहद खतरनाक शक्ति हो सकती है।

(ग) नैनी तकनीक परमाणु और अणुओं को इकाई मानकर मनचाहा उत्पाद तैयार करना है। यह एक नई तकनीकी क्रांति का हिस्सा। यह इतनी शक्तिशाली है कि एक शब्द की चुस्त-दुर्स्त इंसान में बदल दे, वही दूसरी ओर नवाई मध्ये ढैने की शक्ति रखती है, या इसके आने से

मानव जीवन पूरी तरह से बदल सकता है।

(प) औद्योगिक क्रांति के मनुष्य को प्रकृति का नियंत्रक बना दिया है। आदमी ने पत्थर के बेड़ों से हथियारों से शुरूआत कर, शिलाओं को धीलकर उन्हें कुल्हाड़ों और भालों की शक्ति में फ़ला और इस उपलब्धि ने उत्पादकता की दृष्टि से उसे दूसरे जंतुओं की तुलना में लाभ की स्थिति में रखा कर दिया। औजारों को बेहतर बनाने का सिलसिला कई विस्मयकारी मसलों से गुज़रा और औद्योगिक क्रांति आया।

(इ) कार्बन के परमाणुओं की एक शास बनावट से कोयला तैयार होता है तो दूसरी बनावट से हीरा तैयार होता है। दोनों पदार्थों में परमाणुओं का भ्रिन्न-भ्रिन्न तरीके से सजाया गया है ✓

(उ) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है - 'तकनीकी क्रांति'।

प्रश्न 2

~~वाक्य में~~ 6 गई पढ़ है। जब शब्द वाक्य में स्थुति ढौकर व्याकरण के नियमों में बंध

जाता है तो पद कहलाता है।

प्रश्न-3 (क) कई बार मुझे डॉक्टर का अवसर बिला परंतु वह भाई शाहब चुप रहे।

(ख) कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल रहे हैं ताकि वे उसकी जमीन हथिया सकें।

(ग) आपका कहा मैंने सु

(घ) मैंने आपका कहा सुन लिया।

प्रश्न-4 (क)

(i) सप्तर्षि

(ii) शरणागत

समास विभान्न

सात ऋषियों का समूह

शरण में आगत

समास का नाम

द्विर्गु समास

तत्पुरुष समास

(ख)

(i) लंबा है उदर जिसका

(ii) तन-मन-धन

समस्त पद

लंबोदर

तन-मन-धन

समास का नाम

बहुव्रीहि समास

द्विद्वय समास

प्रश्न 5 (क) सभी श्रेणियों के लोग सभा में आए थे

(ख) तो वे का एक बर्तन भी खरीद लेना

(ग) वे लौट आए हैं।

(घ) आप कभी हमारे घर आइए।

प्रश्न-6 (क) हिंदी की परीक्षा में अच्छे अंक न आने पर मेरा चेहरा मुरझा  
गया।

(ख) एक अधिनेता में आँखों से बोलने की कला का हीना आवश्यक है।

(ग) हिंदुस्तान और आंतिक्यों का सभी काम तमाम करने की नई  
रणनीति का रहा है।

(घ) युद्ध के पश्चात् अपने दुर्शमन की जान बरकरार देना - मुर्खतापूर्ण  
कदम है।

छंड - ग

प्रश्न-7 (क) 26 जनवरी 1931 के दिन भारत के पहले स्वतंत्रता दिवस की पहली वार्षिकी पुनरावृत्त होनी थी। इस दिन के लिए कलाकृति! में बहुत ऐयारियों हुई व कलाकृति के माध्ये पर स्वतंत्रता में कीई योगदान न देना का नो कलंक था वह भी धुल गया। कई पुलिस सुरक्षा के बाकूद पहले से ही सार्वजनिक कर्म कानून भग किया गया, पहले कभी इतने लोग कानून भग करने इकट्ठे न हुए थे। पुलिस की लाठियों खाकर भी लोग अडिग रहे रहे और स्त्रियों ने भी बद-चढ़कर डिस्सा लिया व 105 स्त्रियों गिरफ्तार हुईं। यह दिन बहुत विशेष था।

(ख) वै माई साहब के नस पड़ते ही छोटे माई की स्वच्छता बढ़ गई। वह वै माई के ऊर से छिना पढ़ लिया करता था की भी बद कर दिया तथा खेल कूद में ही सारा समय खड़ा बिताने लगा।

मैर विचार से छोटे माई का व्यवहार उचित नहीं था। ज़रूरी नहीं कि पढ़ने के लिए जब तक कोई न कर सके, तब तक आप पढ़ ही नहीं। अनुशासन हीनता किलकुल सही नहीं। खेल कूद करना चाहिए परंतु पढ़ाई के साथ।

(ग) कर्नल कॉलेज का खेमा जंगल में कजीर अली की गिरफ्तार करने के लिए लगा हुआ था क्योंकि उसमें कंपनी के वकील को कॉल किया था और सब नेपाल भागिकर अंग्रेजों के विसदृष्टि सेना एवं करना चाहता था। कर्नल ने कई सालों से खेमा डाल रखा लगाया हुआ था परंतु कजीर अली उन्हें छोड़ा दे जाता और कभी उनके हाथ नहीं लगा।

प्रश्न-४ मानव की इच्छाएँ व लालसाह्यकी बढ़ती जा रही हैं जिनकी पूर्ति हेतु वह मृक्षाते का अनुचित दोषक कर रहा है। समंदर की पीछे सरका कर, उसकी जमीन पर बस्तियाँ बना रहा है, पेड़ों की काटता जा रहा है जिसके कारण कई परिवेश व जानवर अपना घर खो रहे हैं, बास्तों की विनाशलीलाओं से वातावरण प्रदूषित हो चुका है। मृक्षाते के साथ की जा रही अनावश्यक छोड़खानी का परिणाम है - बैवकत बारिश, सूखा, तूफान, सैलाब, जलजले एवं नित नए शोग। कहीं सूखा पड़ा है तो कहीं सैलाब है, तो कहीं औरोना वायरस जैसी लालाज बीमारी का आतंक है। यह सब मृक्षाते से छोड़खाड़ के दुष्परिणाम हैं। मृक्षाते भी एक हंड तक दोषक सहती हैं और जब उसे गुस्सा आता है तो मंजर कुछ उन तीन जहाजों की तरह होता है जिन्हें समुद्र वे उठाकर बेच्यों की गींक की तरह पेंक किया था।

इसलिए मनुष्य को बैंकर मृक्षीति की शक्ति पहचान, उसके साथ लगातार किए जा रहे हैं कुछ दृष्टिव्यवहार को त्रुट्टि रोकने की आवश्यकता है।

प्रश्न 9 (क) 'आत्मज्ञान' कविता में कवि विपदा में ईश्वर से कोई सहायता की चाहना नहीं करता। वह चाहता है कि ईश्वर उसे शक्ति प्रदान करे कि वह मतिकूल प्रसिद्धियों में भी व्याकुल व विचलित न हो और अपने पौरुष एवं आत्मबल के आधार पर उसका सम्मानना करे। वह ऐसा इसलिए चाहता है क्योंकि वह अपनी कठिनाइयों से खुद जूझना चाहता है ताकि उसका व्यक्तित्व और निर्खर। वह विपदाओं चाहता है कि विपदाओं के समय भी उसकी ईश्वर में आस्था बनी रहे और ईश्वर पर अभी संदेह न हो।

(ग) कवीर निंदक को अपने निकट रखने का परामर्श इसलिए देते हैं क्योंकि निंदक हमारे स्वभाव को निर्मल करने में सहायता होता है। निंदक सदा हमें हमारी बुराइयों व कमियों से अवगत करता है। ऐसा करना से वह हमें उन कमियों को सुधारने का अवसर देता है क्योंकि अक्सर हम अपनी कमियों पहचान नहीं पाते और जानते भी हैं तो परिव्राम नहीं करना चाहते। निंदक हमें इन्हीं गलतियों व कमियों की सुधारने के लिए बार-बार उकसाता रहता है।

(d) प्रस्तुत पांचियों में भी श्रीकृष्ण से कहने की दौर्घटी का उदाहरण देकर उनकी भी मदद करने की कहती हैं क्योंकि वे जानती हैं कि कृष्ण अक्त वत्सल हैं। वे कहती हैं कि जिस मकार चीर हरण के समय श्रीकृष्ण ने दौर्घटी का चीर बढ़ावर इसके सम्मान की रक्षा करी एवं उसकी सहायता की उसी प्रकार वे भीरु को भी आवागमन के घक्क से मुक्त कर उनकी शहायता करें।

प्रश्न-10 'मनुष्यता' कीविता हों परीपक्वारी व उदार बनने की सीख देती है, (e) मनुष्य को अन्य माणियों से मुख्ल चेतना शाक्ति मिला है इसलिए वह दूसरा का भला करने में भी समर्थ है। स्वार्थ के लिए तो पशु भी जीते हैं परंतु जी मनुष्य जीवन की सार्थकता तभी है जब वह पराहित के लिए काम करे। ऐसे उदार मनुष्यों को मूल्य के बाद भी याद किया जाता है। की दृष्टियि, कर्ण एवं रातिष्ठव का उदाहरण देकर हमें भी बोलिदानी बनने की सैरणा देता है। हमें कभी भी पैसों के अद्वितीय में नहीं रहना चाहिए क्योंकि यह एक बुद्ध वस्तु है। कीमती तो ईश्वर का आशीर्वाद है जो सभी मनुष्यों द्वारा को बराबर मिलता है क्योंकि ईश्वर ने हम सभी को बराबर बनाया है। हम सभी उसकी संतान हैं, एक-दूसरे के भाई-बहन हैं इसलिए हमें सदा एक

दूसरे की प्रति संवेदनशील होना चाहिए, एक-दूसरे का भला करने को चाहिए तथा अपने उन्नति के लिए नहीं, बल्कि जो दूसरों की उन्नति के लिए संधारित रहता है वही आदर्श मानव कहलाता है,

**प्रश्न ॥ (क)** टोपी को अपनी दादी से नफरत थी, वे सदा टोपी को डंडों से रहती रुदा कभी उससे स्नेहपूर्वक बात न करती जबकि इफ़फ़न की दादी उससे प्रेम एवं स्नेह करती थी। उनकी बोली भी टोपी को अच्छी लगती थी क्योंकि वह उसकी माँ की बोली ऐसी थी। जो अपनापन टोपी को घर में न मिलता, वह उसे इफ़फ़न की दादी के साथ मिलता था। इसलिए उसने दादी-बद्रियों की बात कही। इससे यह पता चलता है कि बालमन प्रेम के सिवा और कुछ नहीं समझता। धर्म, जरि व उस प्रेम के रिश्ते में बाधक नहीं होते। बालमन सरल एवं निष्कपट होता है जो बिना स्वार्थ के, जहाँ प्रेम मिलता है कहाँ चला जाता है।

(ख) लेखक व उसके साथ के सभी बच्चे रोते-पिटते स्कूल जाते थे । उन्हें स्कूल एक कैंद की भी गांति प्रतीत होता था । मास्टरों की पिटाई के डर से उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था । न ही उनकी पढ़ाई में कोई ज्यादा फिलचरणी थी । इन छोटी सी गलती हो जाने पर भी चमड़ी उद्धीँहने की उनके स्कूल की परंपरा के कारण लेखक को स्कूल के नाम से उदासी आती, साथ ही मुखिल पढ़ाई का भी डर बना रहता ।

मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है । इसका कारण है मेरे मित्र और कुछ अध्यापक जो या तो अच्छा पढ़ते हैं अथवा उनका स्वभाव अच्छा है । स्कूल जाने का एक बड़ा कारण खेल का परियोग भी है । पढ़ाई में मेरी इतनी जाये नहीं जितना दोस्तों के साथ खेलने व अध्यापकों से बोर्ड के चर्चा करने में है ।

### खण्ड-४

प्रश्न 12 (क)



### सत्संगाति

एक गला हुआ फल सभी को गला देता है जबकि एक पका हुआ फल सभी फलों को पका देता है । कुछ इसी प्रकार का प्रभाव, संगति का

मानव पर भी होता है, सत्संगति का अर्थ अच्छे लोगों की संगति तो है ही परंतु शांत व शुद्ध वातावरण एवं अच्छे विचारों का भी हम पर बहुत असर पड़ता है। मन सदा लक्ष्य की ओर केंद्रित रहता है व इधर-उधर नहीं भटकता। जैसा एक बच्चा अपने मावा-पिता के व्यक्तित्व का प्रतिक्रिया होता है उसी प्रकार संगति का असर हमारे व्यवहार पर भी होता है। जहाँ सत्संगति हमें सफलता की राह पर ले जाती है, वही कुसंगति असफलता के गति में गिरा देती है। गलत काम करना धीरे-धीरे हमारी आदत में शुभार हो जाता है और पूर्ण व्यक्तित्व विषेला हो जाता है। उदाहरण के लिए अंगुलीमाल का जीवन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

एक डाकू से मिलने के पश्चात वह भी एक बुटेरा व हत्यारा बन गया और बुद्धि की शरण में आकर हैसा महापुरुष बना जिसे आज भी लोग याद रखते हैं। अतः व्यक्ति को अपनी संगति का युनाव सोच-समझकर करना चाहिए। क्वारेर भी अपने एक दोहे में बताते हैं कि किस प्रकार एक ही पानी की बूँद मोती का रूप भी धारण कर सकती है और विष का भी, फक्त है तो सिफ्ट इस बात का कि वह बूँद किसके संपर्क में आती है। हमें भी ध्यान रखना चाहिए कि हम किन लोगों के संपर्क में आ रहे हैं। सिफ्ट दिन में एक घंटा की रित में जूकर सत्संगति में होना नहीं कहलाता, वहाँ पर कीर्तन कर रहे लोगों का मन यहि कपट से भरा है तो आप कुसंगति में हो हैं। जिनके साथ पूरा दिन बिताना है वे लोग यदि सज्जन तो आपकी सफलता के रास्ते खुल जाते हैं।

प्र०-13 परीक्षा भवन

सर्वोदय विद्यालय  
दिल्ली - 32

29 फरवरी 2020

सभा में

प्रधानाचार्य

सर्वोदय विद्यालय

दिल्ली - 32

विषय - स्कूल के बाद विद्यार्थियों की नाटक का अङ्गास करवाने के  
लिए अनुमति माँगने हैं।

महोदय

में विशेष छात्र - परिषद् को सविव है । १०७ मार्च को ही जा रहे  
होती के अवसर पर ही जा रहे नाटक की तैयारी ज़ोर-शोर से  
नहीं ही पा रही क्योंकि जब कक्षाएँ घल रही होती हैं तो हम  
अङ्गास नहीं कर पाते।

आपसे साविनय अनुरोध है कि 7 मार्च को हमें स्कूल के बाद नाटक का अभ्यास करने की अनुमति प्रदान करें ताकि हम मुख्य आविधि के सामने अच्छा प्रदर्शन कर अपने स्कूल का नाम रीशन करें। हम स्कूल के पश्चात 3:30 बजे तक अभ्यास करने की अनुमति चाहते हैं।  
आपसे निवेदन है कि कृपया हमें यह अनुमति प्रदान करें।

आपका आशाकारी

किशोर कुमार

सचिव

घास - परिषद

प्रश्न-15 किशोर - अरे, मित्र अशोक! खेलने नहीं आ रहे क्या? देख, बज गए हैं, जल्दी आ।

अशोक - तू मुझे हैं बया, कल बोइ की परीक्षा है और उझे खेलने की सूझी है।

किशोर - पर क्यूँ तौ कहा था कि तेरी तैयारी पूरी हो गई।

अशोक - पर तब भी, मेरा खेलने का मन नहीं है। मुझे अब परीक्षा मत कर

किशोर - देख अशोक, मन-कन की कोई बात नहीं। क्यों बैमतलब उतावला

हो रहा। जब तैयारी हो गई तो टेंशन मत ले।  
अशोक - कोई टेंशन होनी चाहिए किशोर, बोई की परीक्षाओं में  
जो अंक आएँगे, वही आगे जीवन विधारित करते हैं;  
किशोर - टेंशन लेने से तो कोई अच्छे अंक नहीं आता। पढ़ना ज़रूरी है  
पर साथ में खेल-खुद भी। इससे तेरी सारी ट्रोल, तनाव झट  
के दूर हो जाएगा।

अशोक - कहते हो तुम ठीक हो, पर अगर अच्छे अंक नहीं आए तो।  
किशोर (कुछ देर सोचकर) - तो मैं तुझे समीक्षा खिलाऊंगा।  
अशोक - तू मुर्ख का मुर्ख हो रहे हो, चल आता हूँ मैं नीचे।  
किशोर - अब मैं इतना भी खास नहीं।

14.

~~सी.सी.कॉलीनी कल्याण परिषद्~~

~~सूचना~~

14.

सी.सी.कॉलोनी कल्याण परिषद  
सूचना

29 फरवरी 2020

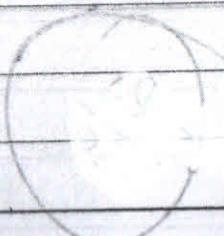
पार्कों की साफ़ा-सफाई

सभी कॉलोनी वासियों से अनुरोध कि हमारे धोत्र के सभी पार्कों में साफ़ा-सफाई बनाए रखें। अपने घर का कूड़ा एवं खाद्य पदार्थों के पैकेट पार्कों में न पेंकें। यदि गंदगी बढ़ेगी तो उससे पैदा होने वाली स्मिक्षियाँ व तिलचट्टे हमें और हमारे जन्मों को ही बीमार करेंगी। अपने धोत्र में साफ़ा-सफाई रखना हम सभी का कर्तव्य है। यदि आपको कहीं कूड़े का ढेर दिखता है तो तुरंत निपालिष्ठित को सूचित करें और स्वच्छता कार रखने में योगदान दें।

किशोर

किशोर कुमार

सचिव, सी.सी.कॉलोनी कल्याण परिषद



16.

इशा लिमिटेड

# लेखनी पेन

चले मक्केन सा मुलायम



एक लेखनी पेन  
के साथ इशा  
इंडिया मुफ्त

→ लिखे दस हजार मीटर तक

→ आकर्षक मैटालिक रंगों में उपलब्ध

→ कमीन ट्रूप्ले बली लिख

→ काले, नीले एवं हरी स्थाई में उपलब्ध

तो आज ही अपनी नज़दीकी स्टेशनरी  
दुकान से खरीदें

ज्यादा जानकारी के लिए - [www.esthalimitedproducts.com](http://www.esthalimitedproducts.com)

60/-

